विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

वीआईपी संस्कृति राजनेताओं के सिर चढ़ी है

आज़ादी की लड़ाई सामंती व्यवस्था के खिलाफ भी उतनी ही थी जितनी अंग्रेजों के साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ। संविधान सभा ने जब भारत को गणतांत्रिक राष्ट्र घोषित किया तब संविधान निर्माताओं की यही भावना थी कि देश के सभी नागरिक बराबर हों। सबको सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय मिले। उनमें प्रतिष्ठा और अवसर की समानता हो। प्रत्येक नागरिक की गरिमा हो। मगर दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में मौजूदा सांसदों के इलाज के लिए मानक संचालन प्रक्रियाएं तय करने वाली उसके निदेशक की चिट्ठी, जो बाद में वापस ले ली गई, ने आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान एक जरूरी बहस जरूर छेड दी है। हालांकि यह मामला चिकित्सा के इस प्रमुख संस्थान में वर्तमान सांसदों के इलाज की विशेष व्यवस्था को लेकर है किन्तु इसके बहाने देश और समाज में अति विशिष्ठ व्यक्ति संस्कृति यानी 'वीआईपी कल्चर' पर जरूरी बहस की भूमिका बन गई है। क्या संविधान की भावना को ठेस पहुंचाने वाली सामंती समाज की इस विरासत को ढोना इस देश के नागरिकों की नियति है? एम्स में सांसदों के इलाज के लिये अलग से विशेष व्यवस्था का जिस आधार पर संस्थान के रेजिडेंट चिकित्सकों के संगठन ने विरोध किया है और निंदा की है वह अन्य सभी सेवाओं पर लागू होती है। इन चिकित्सकों का कहना है कि किसी भी मरीज को दूसरे के विशेषाधिकारों की कीमत पर नुकसान नहीं उठाना चाहिए। उन्होंने यह महत्वपूर्ण सवाल उठाया है। किन्हीं के विशेषाधिकारों की कीमत देश के आम नागरिक क्यों चुकाये।

वीआईपी कल्चर हमारे शासन तंत्र में सर्वत्र फैला हुआ है। अब्राहम लिंकन की लोकतान्त्रिक सरकार की यह अवधारणा कि निर्वाचित सरकार लोगों की, लोगों द्वारा, लोगों के लिए होती है की आजादी के बाद बड़े गर्व से घोषणा की जाती थी। अब उसे कोई याद नहीं करता। अब तो निर्वाचित सरकार विशेष लोगों की, विशेष लोगों के द्वारा, विशेष लोगों के लिए की हो कर रह गई है। सब अपने और अपनों के लिए हो गये हैं और लगभग सभी सामंती मूल्य फिर से हम परभारी पद रहे हैं। जॉर्ज ऑरवेल ने बीसवी सदी के शुरू में लिखे गये उपन्यास 1984 के मूल में यही था कि पूंजीवादी लोकतन्त्र सभी बराबर होते हैं मगर कुछ अधिक बराबर होते हैं। यह प्रतीकात्मक उपन्यास 1970 के दशक में उदयपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विषय में पाठ्यपुस्तक के रूप में पढाया जाता था। आज इस उपन्यास के प्रतीक हम धरातक प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। कुछ लोग जो विशेष होते हैं हर कहीं आम नागरिक से आगे या ऊपर की हैसियत ही नहीं, विशिष्ठ सेवा भी पाते हैं। यह संस्कृति लोकतंत्र में सार्वजनिक संस्थानों को कमजोर करती है और उन्हें राजनेताओं की निजी जागीरें जैसी बना देती है। शासन और आम नागरिक के बीच दूरी बना देती है। लोगों में इसके प्रति तिरस्कार की भावना और विरोध तथा क्रोध होता है मगर वे उसे सहन करते हैं। राजस्थान जैसे प्रदेश में हर पांच साल के बाद होने वाले विधानसभा चुनावों में सरकार बदलती सबने देखी है। मतदाताओं का यह व्यवहार उनकी नाराज़गी ही परिलक्षित करता है। मगर दीवार पर लिखी यह बडी लिखाई राजनेता पढना नहीं चाहते। उन्हें लगता है कि क्योंकि लोगों का कोई आक्रोश सडकों पर नहीं नज़र आता इसलिए ऐसा कुछ नहीं है। सरकार राजनैतिक नियुक्तियां करके तथा लोकलुभावने कार्यक्रमों पर राजकोष का पैसा बहा कर मतदाताओं को खुश कर देने की आशा करने वाली सरकारों को चुनाव में परास्त हुए अनेक बार देखा गया है।

वीआईपी संस्कृति का बढ़ती समृद्धि के साथ भी सीधा संबंध देखा जा सकता है। दो पीढ़ी पहले, लोग ईश्वर से डरने वाले, मोटे तौर पर अनुशासित और शिष्टाचार वाले होते थे लेकिन जैसे-जैसे आजादी के बाद की पीढ़ियां समृद्ध तथा सक्षम हुईं पालन-पोषण की शैली बदल गई। लोग अचानक बुनियादी जिम्मेदारियों से छूट गए।

किसी के अति विशिष्ट होने का अर्थ है भारत के अन्य नागरिक दोयम दर्जे के हैं। भारत का संविधान बनाने वाले लोगों की भावना ऐसा नया राष्ट्र बनाने की नहीं थी जिसमें कुछ लोग औरों से ऊपर हों जिनकी सेवा वैसे ही पहले की जाय जैसी रियासती जमाने में सामंतों की होती थी। उन्होंने ऐसे देश और समाज की कल्पना की थी जिसमें सब बराबर हों। यदि लाइन लगी हो तो किसी के लिए वह लाइन नहीं टूटे। भारतीय समाज में घुसपैठ कर गई कुछ ऐतिहासिक गैरबराबरी को खत्म करने के लिए एक निश्चित समय के लिए संविधान ने जरूर उपाय किये। आज़ादी की सुबह सभी ने ऐसी कल्पना की थी कि राजनीति सेवा के लिए होगी और राजनेता अपनी हैसियत बनाने नहीं बल्कि सेवा करने के लिए आएंगे। महात्मा गांधी ने इसी सेवा भाव को देकर राजनीति को पवित्र बनाने का प्रयत्न किया। आजादी के तुरन्त बाद के कुछ काल में जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री एवं बाद में मोरारजी देसाई जैसे लोगों ने सादगी भरा जीवन जिया जो महात्मा गांधी के मन-वचन-कर्म से अनुप्रेरित था। इन नेताओं का जीवन शासन के व्यवहार में भी झलकता था। इसलिए वे लोग अपनी सीधी-सादी जीवन प्रणाली के लिये आज भी दंत कथाओं की तरह याद किये जाते हैं। दुर्भाग्य से यह शैली लम्बे समय तक बरकरार नहीं रही और अब तो वीआईपी कल्चर हमारे सामाजिक-राजनैतिक जीवन में किसी असाध्य बीमारी की तरह अपना घर बना चुका है जो सम्पूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था को ही लील लिया है। अब राजनीति में प्रवेश सेवा करने के लिए नहीं अपना और अपनों का हित साधने के लिए किया जाता है। शासन के संविधान प्रदत्त सभी स्तरों पर राजनीति का प्रपंच का बोलबाला है। ऐसा निर्वाचित राजनैतिक नेतृत्व प्रशासन तंत्र को अपनी सेना मानता है जिसके जरिये वह लोगों पर राज करता है। इससे दरबारी संस्कृति नये-नये रूपों में पल्लवित हो चली है। इन हालात ने आम नागरिक को भी मजबूर किया है कि यदि वह मदद चाहता है या खरोंचों से बचना चाहता है तो उसे इस दरबारी संस्कृति का हिस्सा बनना पडता है। उधर नेता हों या बाबू, सभी में यही होड लगी रहती है कि वे आम लोगों से श्रेष्ठ कैसे बनें। उन्हें यह श्रेष्ठता शासन के बल पर मिलती है। वीआईपी संस्कृति धीरे-धीरे नौकरशाही और राजनेताओं के मानस में इस हद तक प्रवेश कर गई है कि वे खुद को व्यवस्था से ऊपर मानने लगे हैं।

विशिष्ठ व्यवहार पाने की ब्रिटिश-युग की प्रथा को छोडना राजनेताओं और वरिष्ठ नौकरशाहों मुश्किल लगता है। उनके विशेषाधिकार अब अनौपचारिक प्रोटोकॉल जैसे ही बन गये हैं। इसके चलते राज की चिप्पी लगा विशेषाधिकार चाहने वालों की संख्या बढती ही जा रही है। उनके इस चाहत की दीवानगी की कोई हद नहीं है। विशेषाधिकार से हैसियत, रसूख और पैसा बनता है। व्यक्ति कायदे कानूनों से ऊपर हो जाता है। वीआईपी कल्चर जहां एक तरफ समानता के संवैधानिक प्रावधान का उल्लंघन करता है वहीं दूसरी तरफनागरिक स्वतंत्रता की भी अवमानना करता है। मगर सरकार या राजनैतिक दलों से इस फलती फूलती व्यवस्था समाप्त करने की उम्मीद करना बेकार है क्योंकि सारी सियासत इसी संस्कृति का पोषण करती है और उसे बचाए रखती है। सामंती दौर में मसखरों और लुटेरों से घिरे राजाओं, महाराजाओं और सुल्तानों की सनक ही इंसाफ हुआ करती थी। आजादी के इतने वर्षों बाद लगता है हम उसी तरफ झुकते नज़र आ रहे हैं। अब राजनेताओं के रूप में नए अमीर और हाकिम तैयार हो गये हैं। इस संस्कृति से परेशान तो सब हैं लेकिन इसे बनाए रखने वाली ताकतें इसे किसी भी कीमत पर छोडना नहीं चाहती। हां कभी-कभी दिखावे के लिए जरूर इस पर प्रहार होता नज़र आता है किन्तु फिर वही ढाक के तीन पात।

भारत की चरम विविधता ने एक ऐसे समाज की रचना की हुई है जहां सार्वजनिक संस्थानों और पदों को निजी लाभ के सहज मार्ग के रूप में देखा जाता है, या उन समूहों के पक्ष में अवसर के रूप में देखा जाता है। इसमें जाति, धर्म, और जातीय समुदाय औजार के रूप में प्रयुक्त होने लगे हैं। कानून का शासन इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कौन संचालित कर रहा है। यह देख कर कोई आश्चर्य नहीं होता कि कोई भी कानून का सम्मान नहीं करता है या तभी कर्ता है जब वह सुविधाजनक हो। शासन में ही क्यों वीआईपी संस्कृति आराधना के स्थल मंदिरों में भी पसरी पडी है। जितना बडा मंदिर उतनी बड़ी वीआईपी संस्कृति। कोई कितना बडा वीआईपी है वह मंदिर की प्रमुख मूर्ति के उतना ही अधिक नजदीक जाने का हक पा जाता है। आश्चर्यजनक रूप से यह संस्कृति जेलों तक में फैली हुई मिलती है। वीआईपी गिरफ्तार होकर जेल नहीं जाता अस्पताल के निजी वार्ड में जाता है। वीआईपी संस्कृति का बढती समृद्धि के साथ भी सीधा संबंध देखा जा सकता है। दो पीढी पहले, लोग ईश्वर से डरने वाले, मोटे तौर पर अनुशासित और शिष्टाचार वाले होते थे लेकिन जैसे-जैसे आजादी के बाद की पीढियां समृद्ध तथा सक्षम हुईं पालन-पोषण की शैली बदल गई। लोग अचानक बुनियादी जिम्मेदारियों से छूट गए। वे यह उम्मीद करने लगे कि स्कूल या कोई और उनकी तरफ से काम करेगा। करियर, लक्जरी उत्पादों और अपने लिए अच्छे जीवन की दौड शुरू हो गई और उसके साथ ही विलासितापूर्ण जीवनशैलीबढती गई। इसमें राज से नजदीकी लाभदायक बन गई और उसके साथ ही मरजीदानों तथा एक दूसरे को लाभ पहुंचने वालों का गठजोड की नई संस्कृति भी। वीआईपी संस्कृति शून्य में विकसित नहीं होती। वह उस दृष्टिकोण से आती है जो हम अपने बच्चों और युवा वयस्कों में पैदा करते हैं। सच तो यह है कि माता-पिता ही अपने बच्चों में शिष्टाचार, अच्छा नागरिक व्यवहार और बुनियादी अनुशासन सिखाने के लिए कुछ भी नहीं करते हैं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

त्योहारी सीज़न पर मिलावट का जहर

राजस्थान में मिलावट का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है। दिवाली पर्व पर मिठाई का अपना अलग ही क्रेज है। लगभग सभी घरों में मिठाइयां खरीदी जाती हैं। मगर अधिकांश लोगों को यह पत्ता ही नहीं है की वे जो रंग बिरंगी और चमकीली मिठाइयां खरीद रही है वे मिलावटी है या नहीं। यहां असली और नकली की पहचान करना बेहद मुश्किल है। मिलावट खोर पनीर दूध व मिलावटी मिठाइयों का जमकर कारोबार कर रहे हैं और लोगों के स्वास्थ्य के साथ सीधा खिलवाड़ कर रहे हैं।

प्रदेश में आये दिन लाखों करोड़ों रुपयों की धनराशि के खाद पदार्थ, ड्राई फ्रूट और मिठाइयां पकडी जा रही है। एक अनुमान के अनुसार देश में मिठाइयों का सालाना कारोबार 75 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का है। राजस्थान में भी करोड़ों की मिलावटी मिठाइयों का व्यापार खुलेआम चल रहा है। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने आगामी त्योहारी सीजन के मद्देनजर एक विशेष अभियान शुरू किया है, जिसके तहत राज्य में मिलावटी भोजन की जानकारी देने वाले को 51,000 रुपये का इनाम दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि शुद्ध खाद्य उत्पाद प्राप्त करना नागरिकों का अधिकार है और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। राज्य के लोग मिलावट की शिकायत हेल्पलाइन नंबर 181 पर कर सकते हैं।

आज आम आदमी महंगाई के साथ खाद्य पदार्थों में हो रही मिलावट खोरी से खासा परेशान रहता है। हमारे बीच यह धारणा पुख्ता बनती जा रही है कि बाजार में मिलने वाली हर चीज में कुछ न कुछ मिलावट जरूर है। लोगों की यह चिंता बेबुनियाद नहीं है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड रहा है। खाने पीने के पदार्थों में मिलावट कोई नयी समस्या नहीं है। मिलावट और खराब उत्पाद बेचे जाने की खबरें आम हो चुकी हैं। साल-दर-साल इसका दायरा व्यापक होता जा रहा है।

बाल मुकुन्द ओझा

देश भर में खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने के लिए शुद्ध के लिए युद्ध अभियान समय-समय पर संचालित किये जाते है। बताया जाता है मिलावट और जमाखोरी रोकने के लिए कानून तो है, मगर वे इतने प्रभावशाली नहीं हैं, जो मिलावटखोरों में खौफ पैदा करें। सरकार को चाहिए कागजी कार्यवाही की खानापूर्ति के बजाय जनता को विश्वास में लेकर अभियान चलाये ताकि मिलावटियों में कानून के प्रति भय उत्पन्न हो और मिलावट को सख्ती से रोका जा सके। देखा जाता है मिलावट खोरों को पकडने के लिए सरकारी संसाधन पर्याप्त नहीं है। मिलावटिये गली गली और नगर नगर में सक्रीय होकर आम आदमी की सेहत को खराब करने में जुटे है मगर इनको पकडने वाली टीमें काफी कम संख्या में होने के कारण शुद्ध के लिए युद्ध अभियान अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पा रहा है। आज स्थिति यह है कि सरकारी तंत्र की लापरवाही और मिलीभगत, संसाधनों का अभाव, केन्द्र-राज्य मे परस्पर सहयोग का अभाव, लचर दंड व्यवस्था का खामियाजा उपभोक्ता को चुकाना पड रहा है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड रहा है। संपूर्ण देश में मिलावटी खाद्य-पदार्थों की भरमार हो गई है। आजकल नकली दूध, नकली घी, नकली तेल, नकली चायपत्ती आदि सब कुछ धडल्ले से बिक रहा है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचेवालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं।

मिलावट का अर्थ है महँगी चीजों में सस्ती चीज का मिलावट। मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे-समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड भी किया जाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से प्रतिवर्ष हजारों लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर जीवन से हाथ धो बैठते हैं।

मिलावट का धंधा हर तरफ देखने को मिल रहा है। दूध बेचने और मिलावट करने वाले से लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ने मिलावट के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है।

एक सर्वे के अनुसार भारत में खुले में जितनी चीजें बिकती हैं, उनमें करीब 64 प्रतिशत खाने-पीने की चीजों में मिलावट होती है। कई चीजों में तो हानिकारक केमिकल तक मिलाया जाता है। इनमें दूध, खाद्य तेल, दाल और सब्जियां शामिल हैं। इस सर्वे ने एक बार फिर ये साबित कर दिया है कि भारत में मिल रहे खाद्य पदार्थों में मिलावट बहुत ही साधारण सी बात हो गई है।

सामान्य तौर पर एक परिवार अपनी आमदनी का लगभग 60 फीसदी भाग खाद्य पदार्थों पर खर्च करता है। खाद्य अपमिश्रण से अंधापन, लकवा तथा टयूमर जैसी खतरनाक बीमारियाँ हो सकती हैं। सामान्यत: रोजमर्रा जिन्दगी में उपभोग करने वाले खाद्य पदार्थों जैसे दूध, छाछ, शहद, हल्दी, मिर्च, पाउडर, धनिया, घीं, खाद्य तेल, चाय-कॉफी, मसाले, मावा, आटा आदि में मिलावट की सम्भावना अधिक है। मिलावट एक संगीन अपराध है। मिलावट पर काबू नहीं पाया गया तो यह ऐसा रोग बनता जा रहा कि समाज को ही निगल जाएगा। मिलावट के आतंक को रोकने के लिए सरकार को जन भागीदारी से सख्त कदम उठाने होंगे।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

पैंथरों की आवाजाही से राहगीरों में भय का माहौल

बौंली, (निसं)। क्षेत्र के अरावली पर्वत श्रंखला में स्थित लाखनपुर घाटी व मैहसूर जयगढ़ किले के आसपास पैथरों की आवाजाही वर्षों से अक्सर बनी रहती है। अरावली पर्वत श्रंखला के इस घाटी क्षेत्र में अच्छा वन होने के कारण एवं जयगढ़ किले सहित अनेकों गुफा टाइगरों की शरण स्थली होने के कारण यह पैंथरों के लिए सबसे सुरक्षित वन क्षेत्र माना जाता है। इस को लेकर वन विभाग ने भी लेपर्ड पार्क का प्रस्ताव बनाकर राज्य सरकार को भेज रखा है।

दीपावली के दिन 9:30 बजे ही लाखनपुर से बौंली जाने वाली घाटी में ग्रामीणों को पैंथरों की आवाजाही देखने को मिली जिसे उन्होंने वीडियो व फोटो बनाकर पत्रकारों को भेजा। ग्रामीण सूरजमल वैष्णव ने बताया कि जयगढ़ किले व लाखनपुर घाटी में हमेशा से ही पैंथरों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान रहा है और इनके द्वारा कभी आमने सामने होने पर भी उन्होंने किसी को जन हानि नहीं पहुंचाई। लेकिन वन विभाग द्वारा इनके लिए पर्याप्त भोजन पानी की व्यवस्था नहीं होने के कारण अक्सर यह वन्य प्राणी बौंली उपखंड मुख्यालय या फिर लाखनपुर ग्राम पंचायत के आसपास आबादी क्षेत्र में आराम से देखे जा सकते हैं। पैंथर भोजन पानी के लिए आबादी क्षेत्र के आसपास घूमते हैं एवं कभी कभी यह मवेशियों का भी शिकार कर लेते हैं। इनके जान माल का भी खतरा बना रहता है सड़क मार्ग क्रॉस करते समय यह किसी वाहन की चपेट में आ जाते हैं या फिर शिकारियों द्वारा इन्हें हमेशा खतरा बना रहता है।

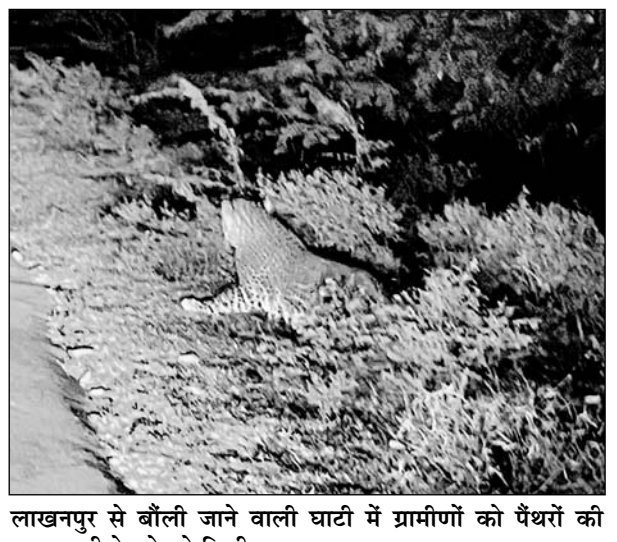
लाखनपुर से बौंली जाने वाली घाटी में ग्रामीणों को पैंथरों की आवाजाही देखने को मिली।

डूंगरपुर में गायों की दौड़ सफेद रंग की गाय ने जीती

- **इससे आने वाला साल 2023 सामान्य रहने का अनुमान लगाया गया**
- **पशुपालकों ने अपने-अपने मवेशियों को रंग बिरंगे कलर और कतरानों से सजाया**

डूंगरपुर, (निसं)। दीपावली के दूसरे दिन जिले में कई प्रकार की परम्पराओं का निर्वहन होता है जिसमे मेरयू, अन्नकूट, भाईदूज का मेला तथा गोवर्धन पूजा के तहत छापी गांव में बुधवार को गाय दौड़ आयोजित हुई। इसमें 200 से अधिक गायों में से सफेद रंग की गाय ने रेस जीती। इसी से आने वाला साल 2023 सामान्य रहने का अनुमान लगाया गया है।

सुबह के समय पशुपालकों ने अपने-अपने मवेशियों को रंग बिरंगे कलर और कतरानों से सजाया। गायों को माता मानकर उनकी पूजा अर्चना की गई। दोपहर के समय छापी, बिछीवाडा, कनबा, भेहणा, घडमाला, नवलश्याम, चंद्रवासा, सामीतेड, धामोद, देवपुरा सहित आसपास के दर्जनों गांवों के लोग छापी पंचायत भवन के पास मैदान में इकट्ठे हुए। पशुपालन अपने साथ सजी धजी गायों को लेकर पहुंचे। इसके बाद मैदान में सभी लोग चारों ओर खडे हो गए। गायों को भी अलग-अलग लाइनों में खडा कर दिया गया। पशुपालकों ने इन गायों को हांकते हुए दौडाना शुरू-शुरू कर दिया। पशुपालक गायों के पीछे भागते रहे। वहीं दोनों साइड में खडे लोग भी हो हल्ला करते रहे। गाय दौड में सफेद रंग की गाय रेस जीत गई। इसी से आने वाला साल 2023 सामान्य रहने का अनुमान लगाया गया है।

पंचायत समिति सदस्य अमृतलाल, सरपंच, उपसरपंच प्रकाश पटेल ने बताया कि अगले साल में सामान्य बारिश होगी। वहीं, गाय दौड में लोगों की भीड के चलते सुरक्षा के लिए बिछीवाडा थानाधिकारी, एसआई सहित कई पुलिसकर्मी भी तैनात थे।

करौली के दुर्गेशी घटा क्षेत्र में टाइगर के पगमार्क मिले

- **सूचना पर वन विभाग की टीम और अधिकारी मौके पर पहुंचे तथा पगमार्क उठाए**
- **क्षेत्र में पूर्व में भी टाइगर ने इसी जगह पर एक चरवाहे का शिकार बनाया था**
- **ग्रामीणों ने मांग की है कि टाइगर के मूवमेंट को देखते हुए यहां सुरक्षा के प्रबंध किए जाएं**

करौली (नि.सं)। करौली में शहर के नजदीक दुर्गेशी घटा क्षेत्र में एक बार फिर टाइगर के पगमार्क मिलने से दहशत फैल गई। टाइगर के मूवमेंट की सूचना पर वन विभाग की टीम और अधिकारी मौके पर पहुंचे तथा पगमार्क उठाए है।

मंगलवार को टाइगर के मूवमेंट की सूचना पर वन विभाग के कर्मचारी अधिकारी भी दिनभर टाइगर को ट्रैक करने का प्रयास करते रहे। साथ ही आसपास के लोगों को सचेत रहने की अपील की है। क्षेत्र में पूर्व में भी टाइगर ने इसी जगह पर एक चरवाहे का शिकार बनाया था। फिर से टाइगर के मूवमेंट की सूचना से क्षेत्र में दहशत फैली हुई है। किसान अपने खेतों में नहीं जा रहे। वही रोजमर्रा के कार्य के लिए भी नहीं निकल रहे हैं। इसको देखते हुए वन विभाग की टीम ने मौके पर 2 कैमरे लगाए हैं। वहीं 10 किलोमीटर आगे 5 कैमरे भी टाइगर के मूवमेंट के रास्ते में लगाए गए हैं। वन विभाग की पगमार्क कौन से टाइगर के है की पुष्टि का प्रयास कर रही है।

मण्डरायल रेंज वनरक्षक फूल सिंह ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुंचे टाइगर का मूवमेंट क्षेत्र में है। ग्रामीणों को सचेत कर दिया है। यहां 5 कैमरे लगाए जा चुके हैं। दो कैमरे और लगाने हैं। टाइगर के मूवमेंट को देखा जा रहा है और दो टीमें क्षेत्र में काम कर रही है। टेरिटरी एरिया के रेंजर को भी मौके पर बुलाया गया है। हालांकि पगमार्क टाइगर के हैं। लेकिन यह पुष्टि उच्च अधिकारी ही कर सकते हैं। लेकिन यहां करौली जिला मुख्यालय से महज 3 किलोमीटर की दूरी में टाइगर का मूवमेंट होने से ग्रामीणों में दहशत हैं। दहशत के चलते ग्रामीण महिला, पुरुष व बच्चे डरे हुए हैं। ऐसे में सभी ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि टाइगर के मूवमेंट को देखते हुए यहां सुरक्षा के प्रबंध किए जाएं और इसे सेंचुरी में ही पकड़ कर ले जाया जाए।

करौली उप वन संरक्षक सुरेश मिश्रा ने बताया कि क्षेत्र में टाइगर के पगमार्क मिले हैं। टाइगर को ट्रैक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। टीम लगातार सर्च अभियान चला रही है। साथ ही लोगों को भी सचेत रहने के निर्देश दिए हैं।

'भारत को इंडिया नहीं बोलें' को लेकर निकाली जा रही यात्रा का स्वागत

नागौर (निस)। अयोध्या से चलकर देश के 26 राज्यों में 15 हजार किलोमीटर चलने वाली श्रीराम दिग्विजय यात्रा मंगलवार को नागौर पहुंची, जहां शहरवासियों ने स्वागत किया। यात्रा के प्रभारी विश्व हिंदू परिषद के उपाध्यक्ष प्रताप सिंह राजपुरोहित के अनुसार यात्रा दोपहर 12 बजे शहर के थांबोलाई नाडी स्थित डेह चौराहा पहुंची। चौराहे पर समाजसेवी जगराम गहलोत, सेवानिवृत्त तहसीलदार सूरजाराम चौधरी, नंदलाल सोनी, राजदीप बेनीवाल, विश्व हिंदू परिषद प्रखंड मंत्री रामनिवास झाड़वाल, पर्यावरण प्रेमी शिवनाथ सिद्ध, गणेश बुगासरा सहित विश्व हिंदू परिषद तथा बजरंग दल के कार्यकर्ताओं व शिव कॉलोनी की माता-बहनों ने स्वागत किया। डेह चौराहे से वाहन रैली बजरंग दल के जिला संयोजक देवेंद्र टाक के नेतृत्व में शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई केशवदास जी की बगीची पहुंची, जहां पर रामद्वारा के महंत जानकीदास के सान्निध्य में महिला श्रद्धालुओं तथा युवाओं ने रथ यात्रा और संत महात्माओं का स्वागत सत्कार किया गया। इसके बाद रामद्वारा में धर्म सभा का आयोजन डॉ. हापुराम चौधरी व विहिप के जिला अध्यक्ष रामेश्वर सारस्वत की अध्यक्षता में किया गया।

धर्म सभा को संबोधित करते हुए महंत जानकीदास ने संपूर्ण हिंदू समाज को एकजुट होकर समाज के लिए कार्य करने का आव्हान किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय कार्यकर्ता रुद्रकुमार शर्मा ने कार्यक्रम को संबोधित किया। संचालन व्याख्याता शरद जोशी ने किया।

इस अवसर पर यात्रा के साथ आए महर्षि शक्ति शांतानंद ने कहा कि अयोध्या से भारत और नेपाल को जोडकर देश के 26 राज्यों में 60 दिनों के अंतर्गत 15 हजार किलोमीटर की यह यात्रा निकाली जा रही है। यात्रा के माध्यम से जन जागरण में भारत सरकार से यह मांग की जा रही है कि भारत को इंडिया नहीं बोलें तथा भारतीय शिक्षा में रामायण सहित अन्य धर्म ग्रंथों को सम्मिलित किया जाए। साथ ही वास्तविक भारत के इतिहास को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना तथा इंडिया को भारत घोषित करना जैसी इन प्रमुख मांगों को लेकर संत महात्माओं का यह काफिला जन जागरण करते हुए देश भर में भ्रमण कर रहा है।

श्रीराम दिग्विजय यात्रा का नागौर पहुंचने पर स्वागत किया।

विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष सारस्वत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर परिषद के प्रांत सह सत्संग प्रमुख पुखराज सांखला, जिला मंत्री मेघराज राव, जिला उपाध्यक्ष प्रवीण बांठिया, राधेश्याम टोगसिया, बाबूलाल टाक, जुगल तिवारी, बजरंग दल के सह संयोजक अनिल खदाव, समाज सेवी परमिल नाहटा, गणेश त्रिवेदी, कानाराम कुलरिया, छोथमल जांगिड़, कालूराम मेंबर, चेनाराम कच्छावा, रामदेव गहलोत, भजन गायक दिनेश माली, परिषद के प्रखंड अध्यक्ष बालमुकुंद ओझा, बजरंग दल के हरिकिशन, जगदीश राम स्नेही, कैलाश शर्मा, सहित विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। नागौर से यात्रा कार्यक्रम संपन्न होने के बाद यात्रा खींवसर होती हुई जोधपुर के लिए रवाना हुई।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 27 अक्टूबर, 2022

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, विशाखा नक्षत्र दिन 12:11 तक, आयुष्मान योग प्रात: 7:26 तक, कौलव करण दिन 12:46 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:11 से आरम्भ होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, भैया दूज, विश्वकर्मा दिवस, चित्रगुप्त पूजा, कलम दवाज पूजा, ग्रहण वैध है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:00 तक, चर 10:47 से 12:11 तक, लाभ-अमृत 12:11 से 2:57 तक, शुभ 4:21 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 5:44

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों सफलता से मनोबल बढ़ेगा।